

॥ टं बंग प्रमोद वल्लभे कर्तव्य कृपातिरि ॥ इति कदम कावीरा वीरावीर सवृषिहि
 ॥ ३ ॥ उल्लालयति स्वकवे प्रमल्लवकुकाटिहि ॥ प्रह्लापायमाहाकवना
 उगदधकवेपथे ॥ ४ ॥ रुष्टरुष्टास्वयमपिदेउकाठविग्रहवृषिहि ॥ वृष्ट
 कृष्णकवेनाथे साईप्रदकविग्रहे ॥ ५ ॥ प्रदंमताथसंदध रुगवंकं
 थागक ॥ कलांकलीपुगाहृत्वा कृत्यमाहस्थितागुरु ॥ ६ ॥ मदिर्मायम

II-300

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

॥ ना ॥

मार्थस्य मन्त्रकं पायमविना ॥ मायां कालहिंसं वा ॥ यथा लारि रुवा म
हं ॥ १ ॥ मन्त्रानप्यकमानानां कृष्णाय कूलवैकसा ॥ हिताय सर्वसत्वा
नां मन्त्ररूपरुलाफयः ॥ ८ ॥ एकासयिष्यसत्त्वानां रुगवां धाम्ना ॥ २ ॥
गङ्गु ॥ माहात्मसयकलरु ॥ न्द्रियासयवित्त्व ॥ ९ ॥ रुगवान्मन्त्र
कायस्य महास्त्रिपस्यगीयक ॥ मन्त्रशीलानसत्त्वस्य हानमूर्तिस्वयं शुद्ध

॥ १० ॥ गङ्गावार्थं मन्त्रावार्थं महार्थमसमाधिवा ॥ मन्त्रिदमन्त्रं ककना
धी नामसंगीतिनरुमां ॥ ११ ॥ यत्किं कुरुषिना वृद्धे रुषिष्यन्कुरुताग
ना ॥ प्रकृत्यन्त्रावसंवृद्धे यावत्तुं कपूनपूतः ॥ १२ ॥ मायां कालमाहात्म
कयावस्ति संप्रगीयक ॥ माहावद्धवद्धे यम्यये मन्त्रधियि ॥ १३ ॥
महं येनाक्षयिनिर्गानं वद्धे ॥ यथा रुगवान्महं ताथ सर्वसंव

॥ ना ॥

इगुक्कधेक् ॥ १४ ॥ यकासयिष्यसत्त्वानां यथासयविशेषकः ॥ अल्लापके
भनासाय अल्लापकस्तत्त्वानां ॥ १५ ॥ एवंमधेयगुणं द्वा वदुपातिमाथा
गकः ॥ कृतांजलिपुटारुत्वा पुट्टाकायस्थिरागुणः ॥ १६ ॥ अथपक्ष्माग्नात ॥ ३ ॥
गोथपक्ष्माग्नात ॥ ७ ॥ अथपक्ष्माग्नात निर्गुणान् संवद्विषयारुस ॥ निर्गुण
सायनांस्थिनां स्वजिह्वास्वमां कृतां ॥ १ ॥ स्तिरं संदधे लोकानां मया

यदयथाधतं ॥ १ ॥ केलाकासापवयंसा वंक्रामध्वयंगिरा ॥ पक्ष्मा
घकगुक्कधा वदुपातिमास्तत्त्वानां ॥ ३ ॥ साधवकध्वयंगिरा साधवकध्व
यानय ॥ यस्त्वंकुगध्विकार्थाय महाकवतयान्वितः ॥ ४ ॥ महार्थानाम
संगीति यविनामधनासिति ॥ संदधे स्तिरं सत्त्वानां संदधे सत्त्वानां
५ ॥ कत्साध्वयसयाभय अर्हकगुक्कधाधियः ॥ अंतस्त्वम कायमनाकृ

॥ ना ॥

साधुगंगातिथिः ॥ ६ ॥ षड्कलावलाकनगभाष ॥ ॥ अथ भाष
सतिरुगवात सकल मधुकलंमरु ॥ संकविद्याधरं कलं वावलाक क
लशयं ॥ १ ॥ लाकालाकारुयंकलं लाकालाक कलंमरु ॥ महामया
कलं वायं महास्त्रिषकलंमरु ॥ २ ॥ षड्कलावलाकनगभाष ॥
ॐ मांघत्संश्रयतं संश्रुतामदयादया ॥ अतः साधुधर्मिनिगाथाकाषं कस्तपि

वापकः ॥ १ ॥ अमाच्छुद्धी उरुवेत्राडो अमस्थिताहृदि ॥ हानमर्हि व
हं वृषा वृषानां रध्वर्कितां ॥ २ ॥ उवैरुक्तिरुतः रवैरुदयपहा हानमर्ह्य
हानकायवागीध्ववमूलपं वनायकनमः ॥ ३ ॥ आयां कालरि संवाधि
कर्मगभाकिमु ॥ ॥ कथथा रुतावान् वृष संवृषा काल संरुव ॥ अकालः स
र्ववर्नाय साहार्थपदमाद्रव ॥ १ ॥ मोहाप्राप्तहितस्यादा वागुदाहावव

॥ न ॥

किं ॥ सर्वहिलापहनाय सर्ववाक्पुलाख्य ॥ २ ॥ महामहमहाबाग-स
र्वसत्त्वविकिकवः ॥ महामहमाधय-सर्वकृष्णमहाविप ॥ ३ ॥ महामहमा
हाभाह-सूक्ष्मभावाभाहसंदत ॥ माहामहमाहाकाक्ष-महाकाधविपर्म
हात ॥ ४ ॥ महामहमाहालाह-सर्वलारुतिसंदत ॥ माहाकाभाभाहा
सोवो-महाभाधामाहायकि ॥ ५ ॥ माहायधामाहाकाथा-माहावर्धुमा

॥ ५ ॥

हावपू ॥ माहानामामहादावा-माहाविपूलमधुल ॥ ६ ॥ माहाप्रह्लायधध
वा-माहाकृष्णकृष्णधी ॥ माहायसामहाकिर्कि-माहाध्वाकिमाहाध्वाकि
॥ ७ ॥ माहामायाधवाविवात्-माहांमायार्थसाधक ॥ माहांमायाविकिबकी
माहामायंद्रजालिक ॥ ८ ॥ माहादातपकिश्च-माहावीलधवाधधी
॥ माहाक्रान्तिधवाधीवा-माहाविर्यपवाकम ॥ ९ ॥ माहाध्वान्तसमाधि

॥ ना ॥

॥ १० ॥ माहाप्रज्ञाक्षरीवर्धक ॥ माहावल्लभमहापाथा ॥ प्रधीधीस्तनसागव ॥
॥ ११ ॥ माहामेडिमयामयो ॥ माहाकावृत्तिकाग्रधी ॥ माहाप्रज्ञामाहाधीमा
॥ १२ ॥ माहाप्रज्ञामाहाह्री ॥ ११ ॥ माहाप्रज्ञावल्लभा ॥ माहावल्लभमहाज
॥ १३ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥
॥ १४ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥

॥ १५ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥
॥ १६ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥
॥ १७ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥
॥ १८ ॥ माहाप्रज्ञामहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥ माहावल्लभमहाह्री ॥

॥ ना ॥

ज्ञानविमृष्टात्मा दध्नाज्ञानविमृष्टधृक् ॥ ३ ॥ दध्नाकावा दध्नार्थार्थं स
निष्ठा दध्नावन्ता विरु ॥ अक्षावविस्वार्थके वा दध्नाकावावसीर्महान् ॥ ४ ॥
मनादिति ध्युपंवात्मा शुद्धात्मा कथमात्मक ॥ रुक्वादी यथावादी कथं
कालिमतं न्यवाक् ॥ ५ ॥ अक्षयादयवादी न रुक्काटिव्यवस्थिक ॥ ६ ॥
वात्सासिंहतिर्नाद ॥ ७ ॥ कृमिर्धमशरीकव ॥ ८ ॥ सर्वदणभाघनाकि सु

थागकमवाक्य ॥ किनाकिना विविजयी चक्रवीर्यमहावल ॥ ९ ॥ गधम
त्वागमावाय्या गधस्वगतपकिर्वसि ॥ साहजगवाधेयया इतं न्यथामा
हातय ॥ १० ॥ वागीस्ववाक्किर्वाणि वावसंकिववंगी ॥ सम्यदाकसम्य
कदीव वरुसंभापदसक ॥ ११ ॥ अवेवर्किंकाकनागमी खपप्रयक
नायक ॥ नावातिर्याततिर्याटा साहारुक्ककावध ॥ १२ ॥ अहंकीनाथ

॥ ना ॥

वारिक वीरवा एभक्तिरुं डिय ॥ रुमं प्राणा रुयं प्राण श्रीगीरुना कृताविल
॥ ११ ॥ विद्यावरनसंपन्नः सगुणालोकवित्तव ॥ निर्ममतिवहंकाल-स
श्रुदायनयस्थिरुः ॥ १२ ॥ संसाधपावकाहिष्ट-कुरुकुरुलस्थिरुः ॥ ॥ ८ ॥
कीर्तल्लहानतिशूरः प्रह्लाससाविदावदा ॥ १३ ॥ सधर्माधर्मगुरुस्वात-
लाकालोक-कवंपव ॥ धर्मस्वराधर्मवाजा-ल्लुधामार्गपद-कुरु ॥ १४ ॥

सिद्धार्थसिद्धसंकल्प-सर्वसंकल्पवर्जित ॥ निर्विकल्पाश्रयाधरु ॥ धर्मधा-
रुपश्रवण ॥ १५ ॥ पंचवातपंचसंहरा-हानं हानाकवमरु ॥ हान
वान्तरुहानति-संहरादायसंरुः ॥ १६ ॥ श्रीध्वकाविध्ववाशागी-
ध्वनं ध्याधियांपकि ॥ पञ्चात्मव्ययह्वल-पवमायन्मिकायध्वका ॥
१७ ॥ यककायात्मकावृद्ध-पंचहानात्मकाविरु ॥ पंचवृद्धममकुरु-

॥ ना ॥

पंचवक्त्रसंगधृक् ॥ १८ ॥ जनकसर्ववृद्धानां वृद्धपुत्रपदावयव ॥ यस्तु
रुवा रुवयाति धर्मयानिरुयां कुरु ॥ १९ ॥ घनकसावावकासा स
धाकाकाजगत्पति ॥ गगधारुव स्वयं पुत्रहृन्नातान लोमहन्त ॥ २० ॥
वशावनामहादिफि हानं धृतिव वावतः ॥ जगत्पदीपास्तानात्मा महा
कामा प्रहास्ववः ॥ २१ ॥ विशावाजगमं धृष्टा मं धृवाजगमस्यार्थकुरु ॥ मे

हस्तिवारुहस्तिपा विस्वदधि वियत्यति ॥ २२ ॥ सर्ववृद्धानात्मा वा
एषा जगदानंदलावतः ॥ विस्वदधी विधाता व पृथ्वा माता माहात्म्यि
२३ ॥ कलकयधवा मंजी महासमयमं धृक् ॥ वत्तकयधवत्थय सिद्ध्या
नारुमदसठाक ॥ २४ ॥ मूमाघपाष्ठा विजेयो वज्रपाष्ठा महाग्रह वज्रा
काष्ठा माहापाष्ठा वज्ररुवरुविकवः ॥ २५ ॥ शुविशुद्धधर्ममरुग्मानग

॥ न ॥

[illegible]

कथयामोदिवंशवाविश्वकाहम॥ माहकपाहपातिष्ठत्तांरकागोरुभाय
 धी॥ १८॥ वंशविश्वंश्रद्धावंशकावंशतिर्वातवाफवान्॥ मूकिभाका
 विभाकांशविमूकितांरकाधिव॥ १९॥ निर्वाधतिर्वातिर्वातिर्वाति
 निर्वातवाफवान्॥ सूरवःशवाककृतिष्टावेरागमपधिरुय॥ २०॥
 मूवशादपभायकतिर्वाकास्वनिवंकन॥ निष्कलसर्वगभापिष्ठुभावी

॥ ना ॥

कमलाश्रय ॥ २१ ॥ अथ काविविधाविमला वागदाघातिनामयः ॥ सप्रव
शिविवृद्धात्मा सर्वरूः सर्ववित्पद ॥ २२ ॥ विह्वलधर्मकाकिता ह्वनम
दयप्रपदक ॥ निर्विकल्पातिवाशाग स्वधर्मसंवधकार्यक ॥ २३ ॥ अना
दिनीधनावृद्ध आदिवृद्धतिनामय ॥ ह्वनैकवचनमलो ह्वनमूर्तिक
भागकः ॥ २४ ॥ वागीश्वरावाहावादि वादीवाक्यवादिपुंगव ॥ वचनं वच

॥ १४ ॥

वलिखुष्टा वादीसिंहायवातिक ॥ २५ ॥ समं कदशीपाभाय शुकामा
ली सदर्थतः ॥ श्रीवत्सल प्रहृष्टिफि ह्वनसंयुक्तवर्णीति ॥ २६ ॥ सा
हसिषत्त्वव अथ काल्यहर्मातिवृद्ध ॥ अथ ह्वनसंयुक्तव क्रीमवादि
महाविप ॥ २७ ॥ कुलाकर्षकलककांश श्रीमान् कृष्णमधुल ॥ दमादि
व्यामपर्याक धर्मधर्ममहाकृत्य ॥ २८ ॥ अगच्छकविपुल भद्रिकव

॥ ना ॥

क्षमशुलः ॥ पप्रनृश्वरः श्रीमान् बल कृष्णमहाविरुः ॥ २९ ॥ सर्ववृद्ध
मालयागा सर्ववृद्धात्मकाव धृक् ॥ सर्ववृद्धमालयागा सर्ववृद्धकसासन ॥
३० ॥ वज्रदत्ताहिपकेथी सर्ववृद्धाधिपस्वर ॥ सर्वलोकस्वरपति सर्वव
जाधवाधिपः ॥ ३१ ॥ सर्ववृद्धमालाविरु सर्ववृद्धमनागति ॥ सर्ववृद्धम
हाकाय सर्ववृद्धसर्वस्वति ॥ ३२ ॥ वज्रसंख्यामालालाका वज्रंश्विमल

पह ॥ विनागादिमालावाग विश्ववर्नकलप्रहः ॥ ३३ ॥ संवृद्धवृद्धपर्य
का वृद्धसंगीतिधर्मधृक् ॥ वृद्धपभारुवर्धीमान् सर्वरूद्रानकासधृक् ॥
३४ ॥ विश्वमायाधवावाजा वृद्धविषाधवागमान् ॥ वज्रकिष्का मालाघडा
विसृष्टपवमाकुरः ॥ ३५ ॥ इत्येवमेवमहायान वज्रधर्ममहायुक्
किना किंवदुर्गभरिक् वज्रवृद्धियथार्थविरु ॥ ३६ ॥ सर्वपावसिमापरी स

॥ नमः ॥

चरुमिविरूपत ॥ विसृज्य धर्मनेशात्मा संस्य कस्तनं इह अरु ॥ ३१ ॥ मा
 यां ज्ञात माहायागः सर्वमजधिपः प्रवः ॥ अष्टाध्वं ऊपयंका निष्ठापहान
 कायधृक् ॥ ३८ ॥ समं गुरुय समकिङ्किगर्शं ऊगधृति ॥ सर्ववद माहाग
 र्शः विस्वतिर्मानव कधृक् ॥ ३९ ॥ सर्वरावः अहवायः सर्वरावस्वराव
 धृक् ॥ अन्यायधर्मविस्वार्थः सर्वधर्मस्वरावधृक् ॥ ४० ॥ एककृतमा

[illegible]

॥ ना ॥

वीरविहस्रवपधक ॥ २ ॥ बाहूदधुकाकपः पदनिकयनरुन ॥ श्रीम
ककुदरुगाहाग गगनाहागतन ॥ ३ ॥ वकापायकलाकाक महीमधु
मलस्थिकः ॥ वंम्राधुसिावनाकाक पादांयुनतवस्थिकः ॥ ४ ॥ वकार्थ
द्वयधर्मार्थ मयमार्थविनस्ववः ॥ नानाविहूफिद्वयार्थ विरुविरुतसंक
कि ॥ ५ ॥ म्मकापलावार्थवकिः शुंयकादकिवयधी ॥ रुवरागमधकिरुव

॥ ११ ॥

रुवद्वयमाहावकि ॥ ६ ॥ शुद्धशुभाशुधवल सववंडाससपुरु ॥ बाला
कमधुलकाया माहावागतपयुरु ॥ ७ ॥ रुद्वनीलायसंवीवा माहा
नीलकवायधीः ॥ महामनिमयूषधी वृद्धनिर्माधरुघनः ॥ ८ ॥ लीधव
दुसकाकंपि मविपादपवाकमः ॥ महास्मकिधवसुतल वरुस्मकिमसाधि
वाह ॥ ९ ॥ बाधंगकसमाभाश सुभागतशुधादधि ॥ म्मशंगमार्गतिथ

॥ ना ॥ विरु सप्तसंख्यमार्गविरु ॥ १० ॥ सर्वसत्त्वमहासंख्यम तिसंख्यमगगल
 पम ॥ सर्वसत्त्वमनाकार सर्वसत्त्वमनाकारः ॥ ११ ॥ सर्वसत्त्वप्रियार्थरु
 सर्वसत्त्वमनाहवः ॥ पञ्चसंख्यार्थरु पञ्चसंख्यविश्ववर्धकः ॥ १२ ॥ ॥ १५ ॥
 सर्वनिर्यातकाक्रिय सर्वनिर्यातकाविदः ॥ सर्वनिर्यातमार्गरु सर्वनिर्यात
 दशकः ॥ १३ ॥ द्वादशसंख्यवाण्यामा द्वादशसंख्यवर्धकः ॥ द्वादशसंख्यन

याकावश्रुस्तानावधाधधकः ॥ १४ ॥ द्वादशसंख्यवर्धकः द्वादशसंख्य
 वरुत्वविरु ॥ द्वादशसंख्यवर्धकः द्वादशसंख्यवर्धकः ॥ १५ ॥ अमयम्
 धनिर्मात कायकाठिविरुवकः ॥ सर्वकनारिसमयः सर्वविरु कनार्थ
 विरु ॥ १६ ॥ नानायातनयापाय ऊगर्थविरुवकः ॥ यानप्रियार्थनि
 र्यातनकायानरुलस्थिरः ॥ १७ ॥ क्रमवर्धकविरुवकः कर्मवर्धकः

॥ ना ॥

कवः ॥ अंधादधिसमृद्धिर्नाथागकांकावतिथकः ॥ १८ ॥ कृष्णाय कृ
संक्रमः सप्रहीतासयास्तन ॥ प्रह्लापायमाहाकवृताः अमाघजगद
र्थकः ॥ १९ ॥ सर्वसंक्रपहीताथाविह्वानाथानिवाधकः ॥ सर्वस
त्वमन्त्रोविषयः सर्वसत्त्वमनागतिः ॥ २० ॥ सर्वसत्त्वमनाकेस्थसुवि
रुतमकांगकः ॥ सर्वसत्त्वमनाकादिः सर्वसत्त्वमनागतिः ॥ २१ ॥ सि

शान्ताविश्रमापकः सर्वशान्तिविवर्जितः ॥ निर्मदिर्यमदिर्यथेः सर्वार्थ
दिगुधात्मकः ॥ २२ ॥ पंचसंक्षार्यद्विष्णुत्वात् सर्वकृतविरावकः ॥ प्रक
नाहिसंवदः सर्ववृद्धस्वरावदकः ॥ २३ ॥ अनेगकायकायाः कायका
टिविरावकः ॥ अष्टावृषसंदर्भः दत्तककुर्महामतिः ॥ २४ ॥ समं
हानगभाभयकुर्वीत ॥ सर्वसंवदवाधयाः ब्रह्मवाधिवतकवः ॥ अनेकयामं

॥ मा ॥

धाति महामंजुकलकय ॥ १ ॥ सर्वमंजुधेज्जतका महाविंशवनकुव
पंवाकूनामहासंथा विंशसंथापठक ॥ २ ॥ सर्वाकावतिराकावधा
उसावाइविंदधक ॥ अकलकलनामीर वरुधेधनकाहिधक ॥ ३ ॥
सर्वधनकलाहिह समाधिकलणपविह ॥ समाधिकायकायाएप्रस
वसंवगकायवाट ॥ ४ ॥ निर्मानकायकायाए वधनिर्मानवंधांमधे

॥ १० ॥

कः ॥ दधादिनिस्वनिर्माधा यथावज्जगदर्थकः ॥ ५ ॥ दधादिदवदव
द संधंदादानवाधिपः ॥ असलंदा सवगव प्रमर्धप्रमथस्ववः ॥ ६ ॥
उलिर्नरुवकांमाव यकभासाजगदुव ॥ पष्ठांरुदधादिगुलाको धर्मका
नप्रकिमाहात ॥ ७ ॥ भेद्रिसंवाहसंतर्ध कवृतावमवर्मिकः ॥ पष्ठा
काधनूर्वानः ॥ क्काहातावनंजहः ॥ ८ ॥ मालार्थिमालकिधिवधुमा

॥ ना ॥

वरुयांक कुरु ॥ सर्वमालयमश्रुतां संवृद्धालोकनायकः ॥ ८ ॥ वंद्य
अहि वाय ४६ माननीय ४७ निरुपम ॥ सर्वनीयकमामाया नमस्तुपय
मागुवः ॥ १० ॥ उलाका ककुमगति धामाययंकविक्रमः ॥ ११ ॥
नियपुनः पठिहः पदतस्तुति ॥ ११ ॥ बाधिसदा माहात्म्य लाका
नीलामहर्षिकः ॥ प्रह्लापावतिनातिष्ठ प्रह्लादत्वं त्वमागतः ॥ १२ ॥

सर्वित्यत्र वित्तुर्व सर्विधाश्रयपंगल ॥ सर्वोपमासक्तिकांशः ॥ १३ ॥
विपंपवः ॥ १३ ॥ धर्मदानपुक्तिः ॥ १४ ॥ वरुमं प्रार्थयः ॥ १५ ॥
भाऊगतां नियानं प्रययिनां ॥ १४ ॥ पदमार्थवित्तुर्व ॥ १५ ॥
रुणममहान् ॥ सर्वसंपत्कवधीमान् मंरुधीधीमतां वरः ॥ १६ ॥
शान्दान्तापुनः ॥ नमस्तु वरवदवजायः ॥ १७ ॥

三、

नमस्तु संन्यागर्ह वृद्धवाधितमस्तुतः ॥ १ ॥ वृद्धवागनमस्तु वृद्धका
यनभातमः ॥ वृद्धपीकितमस्तु वृद्धवावतभातमः ॥ २ ॥ वृद्धस्मिनि
नमस्तु वृद्धहामतभातमः ॥ वृद्धवावतमस्तु वृद्धकावतभातमः ॥
३ ॥ वृद्धवाकवतमस्तु नमस्तु वृद्धसंरुवः ॥ गगलधवतमस्तु न
मस्तु वृद्धसंरुवः ॥ ४ ॥ मायांजाल नमस्तु वृद्धसंरुवः ॥ नमस्तु

39

[illegible]

पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥ ४ अधर्माद्यादिः ॥
मुहः ॥ ५ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥

II-300

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

12 minutes.